ॐ

लल्ल वाख

(लल्ल वाक्यानि)



पं० जियालाल कौल जलाली

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रथम वार १९५६ मूल्य ॥)

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

ज्योतिषी प्रेमनाथ मालिक कृष्णा प्रेस कोठी बाग

निवेदन

श्री जलाली जी ने इन कश्मीरी वाक्यों में देव नागरी मात्राओं के अतिरिक्त निम्नलिखित छः मात्राओं का प्रयोग किया है। यह वही मात्राएं हैं, जो आप के प्राइमर क॒शिरि .जबर में दी गयी हैं। इन की सहायता से कश्मीरी भाषा का लिखना पढना सरल तथा सुगम हो गया है। फिर पुराना कश्मीरी व्याकरण किस काम का है?

कश्मीरी स्वर	मात्रा	कश्मीरी शब्द	हिन्दी अर्थ
आ॑	ा॑	.चा॑र, ना॑व	चिडिया, नई
अ॒	॒	व॒स, म॒श	आयु, भैंस
उ॒	॒	अव॒, कत॒र	हां, ठीकरी
ऊ॒	॒	तु॒र, कु॒त्य	सरदी, कितने
ओ॒	॒	डो॒ट, नो॒न	कण्ठ, नंगा
औ॒	॒	मौ॒ल, कौं॒ग	मूल्य, केसर

प्रकाशक

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

लल वाख

सुमन

(विषय सूची)

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

यि लल त्रागुक गीथ आव ललद्यदि हैंदिस दोहोस प्यठ ७–मि नवम्बर १६५४ परन । अथ पत छि लल द्यदि हैंद्य तिम वाख यिम न वुन्युक तान्य छपेमत्य छि यिम ख)तर अस्य छि श्री राम चन्द जी मल्ला संघ कृतज्ञ ज़ि तिमव लेखन)व्य । दोशवनिय छु हिन्दी अनुवाद ति सत्य । आशा छ ज़ि ललद्यदि हैंद्य व्ययि वाख ति छापन शोजर)विथ ॥ जय हिंद ॥

जलाली निवास
श्रीनगर–कश्मीर

ज० त्र० कृ० जल)न्य

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

लल्ल त्राग

समय बदलान निमीश व्वोंनमीश
युँगुय गंज़रान छि लूमन्य कीश।
श्यतिल्य ईरान तिमन मंज़ बाग
खसव पॉपर वुछव लल्लत्राग ॥१॥

समय निमेष उन्मेष बदलता रहता है। युग ही लोम ऋषि के बालों की गणना करते रहते हैं। शताब्दियां उनके [युगों के] बीच में बहती जारही हैं। चलो पांपोर चल के लल त्राग देख लें ॥१॥

कशीरे युथ गटयज़ोल गव
प्रखुट सिर्यस रहॉन जन स्यव।
मतिस हारस सपुनमुत माग, खसव० ॥२॥

कश्मीर देश में ऐसा अन्धकार छा गया था जैसे राहु ने प्रकट सूर्य को ग्रस्त कर लिया था। मानो प्रचण्ड आषाढ मास शिशुर [माघ] मास में परिवर्तित हो गया था, चलो० ॥२॥

दिवे क्रॉर सांव्यबटनू य आलव
छु लूँगमुत्त बोज़ चौपार्य फालव।
नोवुय पथर च मंज़िय लाग, खसव० ॥३॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

साब भट ने देवी भगवती को पुकारा और कहा चारों ओर से बुद्धि पर ताला लग गया [परदा पड गया] है। माता, तू कोई नया ही खेल रचा । चलो० ॥ ३ ॥

वोमाये बूज़ ह्यौतुन वोतार
गरे तहंदे क्रौरुन नो आर ।
पुर्निम ब्)दरे थनय प्यय वाग, ससव० ॥ ४ ॥

भगवती उमा ने उस की पुकार सुन ली और उसी के घर में बिना किसी हिचक के अवतार ले लिया । भाद्रपद पूर्णिमा को वागेश्वरी का जन्म हुआ । चलो० ॥ ४ ॥

वडान रूज़ सौंय शोकलपक्ष स्यथ
दिवान जुन पूर्ण चंद्रस पथ ।
बुज़ान तस शारदायोंद् नाग, ससव० ॥ ५ ॥

वह शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की नाईं बढती गई मानो पूर्णिमा के शशी को मात कर रही थी । उस के हृदय में शारदा (सरस्वती) भगवती का कुण्ड प्रवाहित हो रहा था। चलो० ॥ ५ ॥

दहन व्)रीशौरी चाये
सती गोरस बनान माये ।
मनुष मौलवुन क्रौल्यम बुथ वान, ससव० ॥ ६ ॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

वागेश्वरी जब दस वर्ष की हो गई, (उस की माता) सती गुरु जी को प्रेम से कहने लगी, ऐसा अमूल्य वर लड़की के लिए देख लें जिससे हमारा हृदय रूपी बाग खिल उठे । चलो० ॥ ६ ॥

कथय छय म्)ज .च्य म्य्)न्य ई.च कल
वने तिय यिय य.छे कीवल ।
.चू क्या.जे यूत बरान म्योन राग, खसव० ॥७॥

वागेश्वरी माता से कहती है, तुम मेरी इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो, होना वही है जो भगवान [केवल] ने करना है, तुम मेरा राग छोड़ दो, चलो० ॥ ७ ॥

यले बो.जवान वुछान द्रायोव
अके नीरिथ ब्ययिस .चायोव ।
छु क्याह तानन यि वोंथमुत द्राग, खसव० ॥८॥

जब गुरु (बुद्धिमान) वर ढूंडने गया, और घर घर फिरता रहा, तो वह कहने लगा यह वरों का क्या अभाव हो गया है । चलो पांपोर० ॥ ८ ॥

पतन फेरान क्रोंडुय तम्य थख
वुछिथ पोंपुरय गरा श्रू.च अख ।
युथुय इच्छयजन्न तिथुय नो दाग, खसव० ॥९॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

फिरते फिरते उस ने अन्त में विश्राम किया और पांपोर ग्राम में एक धर्मिष्ठ घराना देखा जो संपन्न तथा निष्कलंक था, चलो० ॥९॥

ड्ये मर्यय्).ज हशे कथ वार
कोरिन कोरे अ.चानय तार ।
दितिन प्रकाशिस वौजे मं.ज बाग, खसव० ॥१०॥

मर्यादा सास को कैसे भाए, घुसते ही लडकी को कोसने लगी और (उस के पति) प्रकाश की ताडना करने लगी चलो पांपोर० ॥ १० ॥

लोदुय ट्रोगिस तमे नलवठ
गछुन पद्मावती गो.छ फठ ।
छलिथ .चोनुन असान रु.ज वाग, खसव० ॥११॥

जब उसने बहु के ट्रोग (खाना खाने के बरतन) में गोल पत्थर रक्खा, चाहिए था कि पद्मावती घबरा जाती । परंतु वागेश्वरी हंसमुख हो कर पत्थर धो कर लाई, चलो० ॥ ११॥

शिशिर मासस कोंडल फुटम.च
.छ्यवुरमुत नार तमिस दि.चम.च
टंच्यन वुशनान हमय छाथ .जाग, खसव० ॥१२॥

शिशुर मास में टूटी हुई कांगडी (तापने का बर्तन जिस में

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

भुजाई हुई आग थी उसे (सेकने को) दी थी। वह अङ्गुलियों को "हं" सांस से उष्ण करती रही। चलो० ॥ १२ ॥

शमय दम मौन तफय सादान
.जरूय बूज़िथ वुछिथ अन्य मान ।
हर्योंतुन दीहुक .छयनुन तस राग, खसव० ॥१३॥

शम, दम मौन और तप की साधना करती रही, मानो सुनने पर भी बहरी और देखने पर भी अन्धी थी, शनै शनै उस को देह का राग छूटने लगा, चलो० ॥ १३ ॥

युथुय ब्रोंतलिथ करमफल आस
य्युथुय ल्वोंह लंगरस दिथ न्यास ।
पिरिथ व)लिज कोरुन गृहत्याग, खसव० ॥१४॥

जब कर्मफल पकने लगा, उसने गृहस्थ के झंझट को तिलाञ्जलि देदी। (भगवान शिव के) प्रेम में कलेजा घोल कर उस ने घर को त्याग दिया। चलो० ॥ १४ ॥

हर्योंतुन ब्रोंपदोश प्रथा थवनुक
स्यदय मोल गौंर सुमूय गंडनुक ।
वनिन बोंन्य वाख वुज़्यम तस नाग, खसव० ॥१५॥

प्रथा के दृढ करनेके लिए और गुरु-शिशु सेतु को बांधने के लिए उस ने सिद्धमोल को गुरु धारण करके उस से उपदेश भी लिया चलो० ॥ १५ ॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

दिथूय ज्ञानुक पपय् सग पूर
कड्डिन कंहस सु बयाह तान्य दूर ।
ब छेस लल्, नो ब रूज़्स वाग, खस्व० ॥१६॥

ज्ञान से पर्याप्त पानी देकर उस ने 'है' में से अनमोल रत्न निकाला । फिर कहने लगी मैं 'लल' हो गई हूं अब मैं 'वाग' नही रही, चलो० ॥१६॥

अके टाक्यन म्यों द्रांन .चाये
लबन श्यशिकल शिन्यस .छाये ।
करान गथ प्राण ह्यवान रूद .जाग, खस्व० ॥१७॥

एक बार वह दो टाकुओं (मिट्टी के बर्तनों) में घुस गई उसने शून्य की ओट में शशिकला को प्राप्त किया । प्राण जागते रहे और चक्कर लगाते रहे । चलो० ॥ १७ ॥

लज़्य त्राविथ म्यों नन्य द्राये
बनान ऐक्युक शब्द आये ।
ग्य हम सोगुय च स्वहम लाग, खसव० ॥१८॥

अब लज्जा छोड़कर वह प्रगट हुई और ऐक्य का शब्द कहने लगी, मैं 'हंसो' का पात्र बनी तू 'सोहं' का पात्र बन, चलो० ॥१८॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

दिवच नबसय छपजलान लल,
पुनिम चंदरूय स्यठा न्यरमल ।
गिंदान छ्य तारकन मंज़बाग, खसव० ॥१६॥

सांस्कृतिक नभ में ललयदी उज्ज्वल है जैसे पूर्णिमा का निर्मल शशी । वह तारों को साथ रक्खकर उस नभ में खेलती है, चलो० ॥१६॥

दपान ललद्यद यि स्यन्य कोंगवार,
श्यये श्यत्यले थविथ थज़ू कार ।
वोदिचू रूज़न यि भारतुच बाग, खसव० ॥२०॥

ललयद कहती है कि यह मेरी केसर की फुलवाडी छः शताब्दियों के अनन्तर सिर ऊंचा कर के भारत का भाग बनकर सदैव फलती फूलती रहे । चलो० ॥ २० ॥

समव फीर्य फीर्य ई छे जाये
करव ललदोह छु क्याह वाये ।
ग्यवव ईकत्युक जलाल्यो राग, खसव० ॥२१॥

ऐसे स्थान पर हम बार बार एकत्रित हो जाया करें और ललयदी का पर्व मनायें । तथा हे जलाली एकता का राग गाएं, चलो० ॥२१॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

लल वाख

(लल वाक्य जो अभी तक प्रकाशित नही हुए हैं)

अध्याय २)

अभ्यास् किनिय व्यकास फ़ौलिम ,
सौं प्रकाश .जोनुम यिहोय दीह ।
प्रकाश ध्यान् पौंख यीय दोरुम ,
सौंख्य दोरुम क्रौरुम तिय ॥ १ ॥

अभ्यास करने से हृदय रूपी कमल विकसित हुआ, इसी देह को अपना प्रकाश जान लिया। ध्यान करने से प्रकाश स्थिर होगया जिस से मैं ने नित्य सुख प्राप्त कर लिया और ऐसा ही करती रही ॥ १ ॥

गौर् कथ हृदयस मंज़ बाग रटुम ,
गंग् .जल् नावुम तन तय् मन ।
सौंदीह .जीवन मौंखतुय प्रावुम ,
यम् बयि चौलुम प्रौलुम अख ॥२॥

गुरु महाराज का उपदेश हृदय में धारण कर लिया, गंगाजल से तन और मन को धोडाला। इसी देह में जीवन्मुक्त हो गई, यम का भय सहन करते हुए एक (शिव) की पालना की॥ २ ॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

पानय आव पानस सूतिय ,
पानय् पनुन कॊरिन व्यचार ।
पानय पनुन पान नेञ्जिनोवुन ,
पानय् गुपुन पनुन पान ॥३॥

स्वयं ही स्वयं को ले कर आया अर्थात परम शिव (आत्मा परमात्मा के संबन्ध में) प्रकट हुआ स्वय ही (आत्मा) स्वयं (परमशिव) का विचार करने लगा स्वयं ही स्वयं की बढाई जतलाई, स्वयं ही अपने आप को गुप्त रक्खा ॥ ३ ॥

ललि गुरि ब्रमांडु प्येठ्य किन्य् वुछुम ,
श्यशकल वांचूम पादन तान्य ।
ज्ञानकि अमरयत प्रकरथ बगम ,
लूबय मोरुम अन्दु वन्द तान्य ॥४॥

लली ने अपने गुरु महाराज को ब्रह्माण्ड के ऊपर देखा शशिकल [अमृतकला] पादों तक पहुंच गई ! ज्ञान के अमृत से अपनी प्रकृति को सींच लिया और लोभ को सदैव के लिए मार डाला ॥ ४ ॥

क्रिया करम दरम कोरुम ,
तिरथन नांवूम पननिय काय ।
पापन सॊर्बरिथ बसम कॊरुम ,
तति कुस आस तय गॊति कम आद ॥५॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

क्रिया की और धर्म की पालना की, तीर्थों पर जा कर अपनी काया का शोधन किया। सब पापों को इकठा करके भस्म कर डाला, वहां कौन था और यहां कौन आये ॥ ५ ॥

पवन त प्राण सॊमुय ड्यूंठुम ,
मीलिथ रूदुम शेर खॊरि तान्य ।
दीह यलि मॊठुम अद क्याह मॊतुम ,
न कुनि पवन त न कुने प्राण ॥६॥

पवन और प्राण को एक सम देखा । वह मुझ में सिर से पाओं तक मिल कर रहे। देह को ही जब मैं भूल गई तो रहा क्या, न कहीं पवन रहा न कहीं प्राण ॥ ६ ॥

मनस सतिय मनय गॊंडुम ,
च्यतस रटुम चॊपार्य वग ।
प्रकृच सतिय पॊरुश वॊलुम ,
सर मे कॊरिम लबूम वथ ॥७॥

मन को मन के साथ बान्ध लिया, चित की चारों ओर से लगाम पकडली। पुरुष को प्रकृति से ढक लिया और चिन्तन करने से मार्ग प्राप्त कर लिया ॥ ७ ॥

कथा बूजम कथूय करूम ,
कथायि करूम चॊपार्य सथ ।
शास्त्र किनिय कथूय बूजम ,
कथायि द्रावम मतच्य वथ ॥८॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

जब बात सुन ली तो मैं ने भी बात कर ली, कथा से ही सर्वथा सान्त्वना होगई। शास्त्रों के द्वारा ही कथा सुन ली, कथा [उपदेश] ने ही सत्य का मार्ग बतलाया। ॥ ८ ॥

पूरक कुंबक रीचक कोरुम,
पवनस त्रावुम प्यठय किन्य वथ ।
अनाहतस बसम कोरुम;
कैंह नो मुतुम सुय छम कथ ॥९॥

मैं ने पूरक कुम्भक रेचक किए, पवन को ऊपर से पथ छोडा। अनाहत को भस्म करडाला, शेष कुछ नही रहा वही तो बात है ॥ ९ ॥

कैंहनस प्यठय क्याह छुय नचुन,
मुचिय कैंह न तु नचुन त्राव।
फीरिथ छुय तुतुय अचुन,
यिहोय वचुन च्यतूस थव ॥१०॥

कुछ पर तुम यह नाचते क्या हो, कुछ तो रह ही जाएगा यह नर्तन छोड दो। लौट कर तुम ने वहीं समा जाना है, यही वचन याद रखलो ॥ १० ॥

करमुक कुला नो छुय वनिथ गछुन।
वनिथ गछुन क्याह छुय पाय।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कशफुरू फलछुय मीलिथ ग.छुन ,

वगलिथ रो.जुन कुस .छुय न्याय ॥११॥

तुम ने कर्म का वृक्ष बन कर ही यहां से नही चले जाना है ! तुम ने यह भी बताना है कि उपाय क्या हैं ज्ञान का फल यह है कि तुम ने उस (परम शिव) के साथ मिल जाना है और लिप्त रहना है, इस में काहे का झगडा है ॥ ११ ॥

कायस अन्दर रूदुम आचिथ ,

न्यायस थवूनम .चोर्य शायि ।

पाय कें ह लोबुम नो माय छुस कःरिथ ,

.जायस न आयस लोगुम नाव ॥१२॥

काया के भीतर जा कर ठहरा, न्याय के लिए चारों ओर से आशा रक्खली जब कोई उपाय नही मिला तो प्रेम में लग्न रही, न मेरा जन्म हुआ न कभी मैं आई यहां मैं नाम से अङ्कित हुई ॥ १२ ॥

कोसम बागस छोतमय अ.चुन ,

पचियय मन तु अ.चुन प्राव ।

सरूप दरशुन छु तोतुय अ.चुन ,

क्रांत छुय ग.छुन पकुन त्राव ॥१३॥

फूलों के बाग के भीतर जाने लगी हूं, यदि तुम्हारा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

मन मान जाए तो अंदर चले आवं। भीतर जाना आत्मरूप का दर्शन करना है, तुम ने जाना कहां है, चलना छोड दो ॥१३॥

कामस सूतिय प्रय नो बारम ,
क्रूदस द्युतुम पवनुन फेश ।
ल्वभस मूहस .चरण .चाटिम ,
तृष्णा .चजिम गयस खोश ॥१४॥

काम के साथ मैं ने प्रेम नही किया, क्रोध को पवन से हटा लिया लोभ तथा मोह के चरण काट डाले, तृष्णा हट गयी और मैं प्रसन्न हो गई ॥ १४ ॥

ल्यकु त थोकु प्यठ शेरि ह्यचम ,
न्यंदा स्पदिम पथ ब्रोंठ तन्य ।
ललि चिहन कल .जांह नो .छ्यनिम ,
अद यलि स्पनिस व्यदिहे क्याह ॥१५॥

मैं ने गालियों को सिर पर लिया निन्दा तो आगे पीछे होती रही मुझ लली को क्षण भर भी उसका ध्यान न छूटा फिर जब मैं पूर्ण हो गई तो मुझ में क्या समाता ॥१५॥

.जगस अन्दर क्यत्याह पलिम ,
सनिय छि .हांडान दयि सूं.ज वथ ।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

लछि मं.ज़ अकिस दया .ज)निम ,
म)निम यी दप्याज़ि ईशर गथ ॥१६॥

इस जगत में मैं ने कितने ही लोगों का पालन किया सब ही परमात्मा का मार्ग प्राप्त करना चाहते हैं। लाखो में से एक को मैं ने दया का पात्र पाया मानलिया कि यह ईश्वर की गति है ॥१६॥

गायत्री अजपा .छल अकि त)जिम ,
सूहम सतचिय का'रमस थफ ।
अहमस लोत प)ठ्य .जठरय व)जिम ,
गुरु कथ प)जि़म .श)जिप .चख़ ॥१७॥

अजपा गायत्री एक छल से मैं ने ताड ली सोहं के सत्य से मैं ने उस को पकड लिया। मैं ने अहं को चुपके से भुला दिया, गुरु महाराज के वाक्य का पालन किया और क्रोध का नाश होगया ॥ १७ ॥

कौल तय मौल कथ क्युत छुय
तथ क्युत छुय शांत स्वभाव ।
क्रयि हुंद आगुर वात क्युथ छुय ,
अन्तः क्युथ छुय गुरु सुंद नाव ॥१८

कुल और मूल्य किस लिए चाहते हो, वहां के लिए शांत स्वभाव चाहिए। क्रिया का उद्गम पथदर्शन के लिए है, अन्तः के लिए गुरु महाराज का नाम मात्र ही पर्याप्त है ॥ १८ ॥

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रान तय ध्यान क्याह सनु करिय ,
.च्यतस रठ त्रकूरु वग ।
मनस त पवनस मिलवन करुय ,
सहज़स मं.ज कर तिरथ स्नान ॥ १९ ॥

स्नान और ध्यान किस लिए हैं । चित की रास दृढ पकड लो मन और पवन को मिलाले सहज में तीर्थ स्नान कर ॥१९॥

प्राणस सूतिय लयु यलि कारूम ,
ध्यानसु थवूनमु न रोज़नस शाय ।
कायस अन्दर सोरुय वुछुम ,
पायसु पोवुमु काडमस ग्राय ॥२०॥

प्राण के साथ जब मैं लय हो गई ध्यान के लिय स्थान ही न रहा । काया में सब कुछ देख लिया अपने आप को चेता-वनी दी और इसका शोधन किया ॥२०॥

मनस ग्राय .चांग्यपज़िकुय अन्न रवोम ,
तवकुय बलगोम कारूमस क्रय ।
आगुर वातिथ अमरयथ .जलु चोम ,
छिवनय मन गोम वारमस प्रय ॥२१॥

शुद्ध अन्न खाने से मन का मैल हट गया, उसी से बल प्राप्त करके क्रिया के निकास पर पहुंच कर अमृत जल पी लिया, मन हर्षित हो गया और मैं ने भी इसको प्रेम किया ॥२१॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

म्यथ्या कपठ न असथ त्रोवुम ,
मनस कोरुम सुय वोपदीश ।
.जनस अन्दर कीवल .जोनुम ,
अनस ख्यनस कुस छुम दूश ॥२२॥

मिथ्या कपट तथा असत्य छोड दिया और मन को वही उप-देश किया । सम में केवल उसी को जान लिया, अन्न खाने में क्या दोष है ॥ २२ ॥

कायस बल छुय मायस .जागुन ,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप ।
आयस बल छुय तत्व व्यदु .जानुन ,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य ॥२३॥

काया का बल प्रेम के लक्ष्य की ताक में रहना, प्राण का बल शब्द स्वरूप में है । आयु का बल तत्त्व विद्धि का जानना ज्ञान का बल आद्य से अन्त तक है ॥२३॥

गगनस भूतलस शिव यलि ड्यूठुम ,
रवस लबि न रोज़नस शायि ।
सिर्यसिकि प्रभावु व्यशमय .जोनुम ,
.जल थल थलस सुत्य मीलिथ क्याह ॥२४॥

गगन और भूतल में जब शिव को देखा, सूर्य को फिर रहने का स्थान नही है । सूर्य के प्रभाव से यह सारा विषामय जगत जान लिया, जल थल के ... ॥२४॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

वावु,च ग्राया पानस वुछिम ,
वानस डीठिम सौरि रंग वस ।
ध्यानस अन्दर दमदम मीलुस ,
गुँनिन त्रोवुम मुचरिथ बर ॥२५॥

अपने देह में पवन की हरकत देखी, दुकान पर नाना प्रकार की वस्तुएं देखीं , ध्यान में क्षण क्षण उसी के साथ लय हो गई तीन गुणों के लिए किवाड खोल डाला ॥ २६ ॥

गो.जनि आयस ग.छुन ग.छयम ,
पकुन ग.छयम वावलूक पाल ।
कंहनस प्यठय नःचुन ग.छयम ,
अचुन गछ्यम सूक्ष्म प्रकार ॥२६॥

मैं तो यहां रहने को आई अब जाना चाहिए वायु मंडल में से चलना चहिए कुछ पर तो नाचना चाहिए सूक्ष्म विद्धि से भीतर जाना चाहिए ॥२६।

वाख़ स्यद .छोह दिथ मुँखिस वीठूम ,
सुँखिस डीठूम गो.जनस शाय ।
दुँखस अन्दर न्यंदूर मीठुम ,
बुँद यलि .जीठूम मीठूम कथ ॥२७॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

वाक् सिद्धि इधर उधर फिर कर मेरे मुंह में बैठ गई, सुख को रहने का स्थान देखा। दुःख में निद्रा मीठी लगी बुद्धि जब विस्तृत हो गई स्वाद आगया ॥ २७ ॥

शेलायि हं.ज़्य वौतमा बाज़ूम ,
सोंबरुम ट्योक पोश आसन-पठ ।
मनस अन्दर व्य.चार कोरुम ,
वुछुम त डयूठुम शेल कनिवठ ॥२८॥

शिला की उत्तमता का पूजन किया, तिलक फूल औरआसन-पट इकठे कर लिए। मन में विचार किया तो शिला को पत्थर देखा ॥ २८ ॥

.जनम प्रावित्थ व्यबव .छोंडुम ,
लूबन बूगन बरम प्रय ।
सुमुय आहार स्यठा .ज़ोनुम ,
.चोलुम दुख वाव पोलुम अख ॥२९॥

जन्म प्राप्त करके वैभव मांगा, लुभाने वाले भोगों के साथ प्रीति की सम आहार ही अधिक मानलिया दुःख और दारिद्रता सहन कर के एक ही का स्मरण किया ॥ २९ ॥

.जल् प्येट्य पकुन ठ्यकुन लूकन ,
नारस अचुन मारस व्यद ।
आक)श्य गमनो वुफुन आसुन ,
कपठ वासुन आसुन .च्यथ ॥३०॥

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

जल पर चलना, और लोकों में फिरना, आग के भीतर जाना यह विद्धि के विरुद्ध है। उड कर आकाश गमन करना यह सब कपट है ॥ ३० ॥

अन्दर आसिथ न्यबर छोंडुम ,
पवनन रगन फ्युरनम सूँर ।
ध्यान किन्य दयदगि कीवल .जोनुम ,
रन्ग अव सन्गस सूत्य मीलिथ क्यथ ॥ ३१ ॥

वह भीतर था, मैं ने उस की बाहर खोज की, पवन ने मेरे रगों में जान डाल दी। ध्यान में भगवान को अभिलाषा होने के कारण मैं ने उसी केवल को जान लिया, यह सब बाहरी प्रपंच उसी में सम्मिलित हो गया ॥ ३१ ॥

ॐ कार शरीर कीवल .जोनुम ;
शब्द रूप रस गंध सूतिथ ह्यथ ।
आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम ;
परम त्रोंथ दोरुम शेरस प्यठ ॥ ३२ ॥

ओंकार शरीर को केवल जान लिया, शब्द रूप रस गंध सब लेसाथ कर। वह स्वयं आत्मस्वरूप था। परम तत्व को सिर पर धारण कर लिया। ३२।

.जन्म प्राविथ कर्म सोदुम ;
धर्म पालुम स्वँय छ्रुम सथ।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

न्यत्रन अन्दर प्रयम दोरुम ;
.चोरुम त मोनुम यिहोय अख ॥३३॥

जन्म लेकर कर्म साध लिया धर्म का पालन किया वही तो दृढ निश्चय है नेत्रों में प्रेम धर लिया; इसी एक की अर्चना की और इसी को मान लिया । ३३ ।

स्वॅरगस मा.जुन क्याह छुय बासुनी ;
नरकस वासुन आसुन दूश ।
.चख रूश नासुन शिवमय ख्वॅसुनो ;
पानय आसुन कासुन बीद ॥३४॥

स्वर्ग की आकाङ्क्षा क्या है नरक वास दूषित है । क्रोध, ईर्षा न होना ही शिवमय होना है स्वयं ही होना भेदभाव को दूर करना है । ३४ ।

मनस ग्वॅन छुय .चं.चुल आसुन ;
च्यतस ग्वॅन छुय ग.छुन दूर ।
.जीवस ग्वॅन छुय ब्वछि त्रेश आसुन ।
आतमस ग्वॅन छुय नासुन लीफ ॥३५॥

मन का गुण है चचल होना चित्त का गुण है दूर दूर जाना जीव का गुण है भूखा प्यासा होना । आत्मा का गुण है निर्लेप होना । ३५ ।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

शिव त शक्त कत्यू डींठिम ;
तिमव राटूम कायत्र जाय ।
दायम द)र ससि सने , मीठम ;
तीलिथ रूज़म त्रा)विश लर ॥३६॥

शिव और शक्ति को कहां देखा वह काया में समागए । धैर्य तथा सान्त्वना फिर कर साथ रहे । ३६ ।

सरस सूतिय सोदा कोरुम ;
हरस कारुम गूँडि सीवन ।
शेरस प्यठ्य किन्य नचान ड्यूठम :
गझान ज्यूंठुम आबम प.छ ॥३७॥

मैं ने शीर्ष (केवल) को जानने का प्रयास किया पर पहले हर का पाद सेवन किया ! सिर के ऊपर से उस को नाचते देखा जाते हुए जब देखा तो विश्वास हुआ । ३७ ।

कुनुय अक्षुर वुंबूरि पोरुम ;
सुय म्य रूटुम हृदयस मंज़ ।
सुय म्य लूति प)ठ्य गोरुम त चोरुम ,
आ)सुस सरतल सपनिस सूँन ॥३८॥

एक ही अक्षर आयु भर पढ लिया वही हृदय में धारण कर लिया वही चुके से मैं ने सुडोल बनाया मैं पीतल थी सोना बन गयी

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri